नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

दर्शन विमर्शात्मक चेतना: प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

पत्रकारिता का दर्शन विषय पर दिया विशेष व्याख्यान, जनसंचार विभाग का आयोजन

वर्धा, 17 अक्टूबर 2019: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति और जाने-माने दर्शन शास्त्री प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि भारतीय दर्शन में दर्शन को सभी प्रकार के विद्या स्थानों को प्रकाशित करने वाले उस उपकरण के रूप में देखा जाता है जिससे सभी प्रकार की क्रियाएं की जाती हैं। उन्होंने कहा कि दर्शन

विमर्शात्मक चेतना है और पत्रकारिता एक निर्णयात्मक अभिकथन। प्रो. शुक्ल जनसंचार विभाग द्वारा माधवराव सप्रे सभा कक्ष में आयोजित विशेष व्याख्यान शृंखला में 'पत्रकारिता का दर्शन' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि पत्रकार के रूप में हम निर्णय लेने वाले नहीं होते लेकिन घटनाओं के संबंध में एक निर्णयात्मक प्रतिज्ञप्ति प्रस्तुत कर रहे होते हैं। जितनी तेजी के साथ पत्रकारिता मनुष्य में विचार निर्माण, दृष्टि निर्माण, निर्णय करने के लिए सूचनाएं देने की भूमिका का निर्वहन करती है उतनी ही ज्यादा उसमें दार्शनिकीकरण की संभावना होती है। रियल टाइम में दी जानी वाली सूचनाओं के इस दौर में सूचनात्मक प्रतिक्रिया हो, मनुष्य की निर्मिति के लिए सकारात्मक यत्न मीडियाकर्मी के द्वारा हो, इस प्रकार की संभावनाएं समाप्त होती जा रही हैं।

प्रो. शुक्ल ने विद्यार्थियों को कई उदाहरणों के माध्यम से वस्तु और तथ्य के बीच अंतर को समझाया। उन्होंने बताया कि घटना या वस्तु अपने अस्तित्व के समय ही समाप्त हो जाती हैं, उसके बाद केवल तथ्य रह जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति तथ्यों में हस्तक्षेप करता है इसलिए तथ्यों के बीच भी वस्तुनिष्ठता का प्रश्न उठता है। उन्होंने बताया कि तथ्यों का संसार मनुष्य की रुचि से भी प्रभावित होता है। प्रो. शुक्ल ने कहा कि ज्ञान ज्ञान का प्रस्तुतीकरण, तथ्यों का अन्वेषण, तथ्यों का प्रस्तुतीकरण दार्शनिक विमर्श को जन्म देते हैं। उन्होंने बताया कि शब्दों के प्रयोग द्वारा भी तथ्यों का संसार निर्मित होता है। शब्दों के प्रयोग और उसके पीछे का इतिहास बिना दार्शनिक अभिनिवेश के व्यक्ति को प्राप्त

नहीं हो सकता। इसके लिए उस क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपरा, ज्ञान परंपरा, जीवन प्रणाली का ठीक से बोध होना

आवश्यक है।

व्याख्यान के बाद एम.ए. तृतीय छमाही के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित प्रायोगिक अखबार 'मीडिया समय' के नए अंक का विमोचन कुलपति के द्वारा किया गया। आरंभ में कुलपति के सम्मान में जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने

लोक गीत प्रस्तुत किए। विभागाध्यक्ष प्रो. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण किया। कार्यक्रम का संचालन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया ने किया और धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रोफेसर डॉ. अख़्तर आलम ने किया।